SHRI CHARAN SINGH: As the hon. House is perhaps aware, we held a meeting of the top officers on the 27th and we did set up a Cell which will supervise the investigations. I need not go into the details.

The question of summoning the I.Gs from all over the country was also discussed and in the end we decided not to call them just now. I would welcome all possible suggestions that any hon. Member of the House would like to make to the Government, so that the common purpose of us all, and the common aim that we have all in view, can be served. I would therefore welcome these suggestions and I may assure you that before the House disperses for the next session, I will try to make a statement.

12.41 hrs.

PUBLIC ACCOUNTS COMMITTEE

EIGHTH REPORT

SHRI C. M. STEPHEN (Idukki): I beg to present the Eighth Report of the Public Accounts Committee on paragraphs of the Report of the Comptroller and Auditor-General of India for the year 1972-73, Union Government (Civil), Revenue Receipts, Volume I, Indirect Taxes relating to Union Excise Duties.

12.42 hrs.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

EIGHTH REPORT

SHRI YADVENDRA DUTT (Jaunpur): I beg to present the Eighth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions.

---

12 43 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) DROUGHT AND STARVATION CONDITIONS IN NORTH BIHAR

श्री लखन लाल कपूर : (पूर्णिया) : अध्यक्ष महोदय, सैकड़ों मील उत्तर भारत की यात्रा करने के बाद जब मैं यहां पहुंचा तो मैंने ता० 13 को नियम 377 के अन्तर्गत इस मामले को उठाने का नोटिस दिया था। मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है ता० 14 को मुझे यह सूचना दी गई कि यह विषय विचाराधीन है, ता० 15 को भी यही कहा गया कि यह विषय अभी भी विचाराधीन है उस के बाद आज तक कम्यूनिकेशन-गैप रहा और मैं इस जनमहत्व के विषय को नहीं उठा सका। अध्यक्ष महोदय, उत्तर बिहार में करोड़ों लोग भुखमरी की स्थिति में है, मुझे बड़े क्षोभ के साथ कहना पड़ रहा है कि आज 17 दिन के बाद मुझे इस स्वाल को उठाने का मौका दिया जा रहा है, जब कि पानी नाक के ऊपर जा चुका है।

उत्तर बिहार में सूखे और असामयिक वर्षा के कारण करोड़ों लोग बेकार हो गये। उन की दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण, परचेजिंग कैपेसिटी न होने के कारण उनके पास खाने के सामान की कोई व्यवस्था नहीं है। हरिजन, आदिवासी और जो सीमान्त किसान हैं—उन के पास कोई खाने की सामग्री हैं, न बाजार से खरीदने की ताकत है और न सरकार की तरफ से ही कोई व्यवस्था की गई है कि उन को तकावी ऋण देकर या किसी और तरह की सहायता देकर उन के खाने की व्यवस्था की जाय। मुझे सैकड़ों गांवों मे जा कर देखने का मौका मिला और मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि तीस वर्षों के स्वराज्य के बावजूद हमारे सभ्य समाज पर यह लांछन है, कलंक का टीका है कि हमारे हरिजन और

आदिवासी आज भी "स्नल" जिस हिन्दी में घोघा कहते हैं, उस खा रहे हैं। एक दो परिवार नहीं, हजारों की तादाद में जुलाई महीने से खा रहे हैं। हमारे आदिवासी लोग जो जंगल की जड़ जो तीती और जहरीली होती है, उस को गरम पानी में उबाल कर महीनों से खा रहे हैं, क्योंकि न तो उन्हें अन्न मिल रहा है और न ही उन के पास कोई काम-धन्धा है। हमारा छोटा नागपुर का इलाका, जो आदिवासी क्षेत्र है, वहां की जनता इस जंगल-जड़ और अन्यअ खाद्य-पदार्थों पर पिछले छः महीने से जीवन-यापन कर रही है, जिस के परिणामस्वरूप उन के ऊपर तरह-तरहके रोगों का आक्रमण हो रहा है, काला-ज्वर का आक्रमण हो रहा है।

पिछले 10 अक्तूबर का पूर्णिया में डी० डी० सी० की मीटींग में मैंने इस सवाल को उठाया था कि इस तरह के बेकार लोगों की "फूर फार वर्क" स्कीम के अन्तर्गत दिया जाये। लेकिन वहां के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने मुझे जवाब दिया—चूंकि फूट कार्पोरेशन आफ़ इण्डिया की तरफ से हमें अनाज नहीं दिया जा रहा है, इसलिये हमारे सामने लाचारी है कि हम ऐसे लोगों को अनाज देकर काम करायें और उन की जीवन रक्षण कर सकें। मैं दो बार वहां पर जा चुका हूं और नवम्बर महीने में भी मैंने उन की वही स्थिति देखी ? ये लाखों, करोड़ों लोग जो भुखमरी के कगार पर खड़े हैं, उन के लिए कोई स्कीम नहीं है और ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जिससे उस को इस कष्टमय जीवन से बचाया जा सके। इसलिए मैं सरकार का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं और निवेदन करता हूं कि वह जल्द से जल्द ऐसे कोई कदम उठाए जिनसे आयन्दा ऐसी कोई बात न हो कि वे दाने-दाने के लिए मोहताज हो जाए।

(ii) REPORTED ARREST OF KHAN ABDUL GHAFFAR KHAN IN PAKISTAN

SHRI SAMAR GUHA (Contai): Sir, this House, on an earlier occasion, also expressed grave anxiety about the illness of Khan Abdul Gaffar Khan. I had the occasion to express the anxiety about his illness. As this relates to a certain diplomatic norm, kindly allow me to read the small brief which I have written instead of making a speech on the matter.

MR SPEAKER: Yes.

SHRI SAMAR GUHA: Sir, we feel greatly disturbed by the news of the arrest of Khan Abdul Ghaffar Khan, who is now 95 years old. Although he is now a national of Pakistan, yet we cannot forget his immense contribution to the independence struggle of our country. He was endearingly known to all of us in the country, which is now known as the Indian Sub-Continent, as Badshah Khan and Frontier Gandhi. He is respected as equally in our part of the country as in Pakistan. Remembering the history of our freedom struggle and our great respect for the Frontier Gandhi, we appeal to the Government of Pakistan on humanitarian grounds to release him and allow him to live in a place wherever he wants so that he may pass the last days of his life peacefully. A great Khoda-e-khidmatgar a servant of God, like him should be given that freedom. We hope our appeal will receive necessary response from the Government of Pakistan, and their administration will not consider this expression of our anxiety for Badshah Khan as any interference in their internal affairs in a narrow technical diplomatic sence.

(iii) DEMONSTRATION BY WORKERS OF RAILWAYS, DEFENCE UNDERTAKINGS ETC. FOR 8.33 PER CENT BONUS.

SHRI SAUGATA ROY (Barrackpore): Sir, Yesterday, the workers of the railways, defence undertakings, P&T and CPWD belonging to INTUC